आलेख

विश्व पृथ्वी दिवस पर सम्पूर्णा ने लिया जल संरक्षण का संकल्प

-डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका अध्यक्षा

वैसे तो रोजमर्रा की बातों में आजकल कश्मीर फाइल्स बहुत चर्चा में है। कल जब मेरी कुछ सहेलियों से जल को लेकर बातचीत हुई तो जानकर आश्चर्य हुआ कि उनकी जल को लेकर जानकारी बहुत ही कम है। ठीक भी तो है हम सब शहरों में रहने वाले लोग हैं। और शहरों में नल खोलते ही पानी आ जाता है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त यह अमृत इसलिए महत्वहीन सा हो जाता है या यूं कहूं कि एक औसतन साधारण मनुष्य अपनी दिनचर्या में इतना व्यस्त रहता है कि उसे प्रकृत्ति में हो रहे प्रकृत्ति प्रदत्त पदार्थों की लेश मात्र भी जानकारी नहीं रहती। लेकिन प्रश्न तो यह है कि वह जल जिसके बिना जीवन ही संभव नहीं है और यह मनुष्य मात्र के शरीर में 70 प्रतिशत से भी अधिक पाया जाता है। यानि कि मानव शरीर की संरचना भी जल के बिना संभव नहीं है। वही मानव जल के महत्व को लेकर इतना सोया सा क्यों है।

मीरा जो एक समाज सेविका है, बता रही थी कि आने वाला समय संकट भरा है। दिल्ली और देश में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेकों शहरों और गांवों में पानी की कमी का खतरा मंडरा रहा है। साउथ अफ्रीका का एक शहर कैपटाउन में पानी लेश मात्र भी नहीं बचा है। अभी कुछ समय पूर्व चैन्नई शहर में भी अचानक एक दिन नलों से पानी आना बंद हो गया। जब डरे सहमें निवासियों ने अधिकारियों से इस विषय में बात की कि तो उन्होंने बताया कि पूरे शहर में पानी की एक बूंद भी नहीं बची है। जल अधिकारियों ने पास के दूसरे स्थानों से जल लाकर लोगों को पीने का जल उपलब्ध कराया। भू-जल स्तर धीरे-धीरे गिरता जा रहा है। मीरा ने बताया कि देश के 72 प्रतिशत स्थानों पर भू-जल लगभग समाप्त हो गया है।

मीरा बता रही थी कि रूस और यूक्रेन के युद्ध से पहले पर्यावरण शास्त्री यही कहते थे कि तीसरा विश्व युद्ध यदि होगा तो वह पानी को लेकर होगा। हालांकि आज पूरा विश्व तीसरे विश्व युद्ध के कगार पर बैठा है और उसका कारण भी जल नहीं है। अपितु शक्तिशाली राष्ट्रों के बीच की प्रतिस्पर्धा, षडयंत्र, आतंकवाद और अगर संक्षिप्त में कहना हो तो राक्षसी प्रवृत्तियां हैं।

तभी मेरी दूसरी सहेली गीता ने मुझे टोकते हुए कहा कि आज का विषय तो जल ही होना चाहिए। जल के बिना यह जीवन संभव नहीं है। किंतु बहुत तेजी के साथ जल के प्राकृतिक स्त्रोत सूखते जा रहे हैं। झरने, तालाब, पोखर और नदियां सूख रही हैं या सुप्त हो गईं हैं। भू-जल का स्तर शहरों में बहुत ही निचले स्तर तक पहुंच गया है। आश्चर्य की बात यह है कि राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश जैसे प्रदेशों के साथ-साथ उत्तराखण्ड जैसे पर्वतीय प्रदेश में भी जल संकट अपनी चरम सीमा पर है। यदि जल विषेषज्ञों की मानें तो दिल्ली, चैन्नई, बैंगलोर, शिमला जैसे विकसित शहरों में भी जल की समस्या मुहं बाय खड़ी है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान के बाद सभी माननीय सांसद अपने गांवों की ओर जा रहे हैं। किसान और गांव की समस्या को जल की उपलब्धता से सीधे जुड़ा हुआ पाते हैं। जहां एक ओर देश की विकास की राह में निरंतर आगे बढ़ रहा है। गांवों में सिंचाईं हेतु पानी आज भी समस्या बना हुआ है। धान की खेती में प्रचूर मात्रा में पृथ्वी के धरातल से जल निकालकर, उस जल में ही धान की बुआई की जाती है। बुआई के समय में दिन-रात भू-जल को बांझ बनाकर जल का दोहन किया जाता है। यह एक जटिल समस्या है। तभी मीरा ने कहा कि सम्पूर्णा तो हमेशा ही महिला और प्रकृति के संरक्षण की बात करती है। जल, प्रकृत्ति में सबसे मुख्य अवयव हैं। जिस प्रकार से भू-जल नीचे गिरता जा रहा है वह हम सब के लिए चिंता का विषय है। तभी मीरा ने कहा कि सम्पूर्णा को पूरे देश में जल मित्र बनाकर इस प्रयास से जोड़ा जाना चाहिए। आइए! हम संकल्प लें कि हम जल को व्यर्थ बर्बाद नहीं होने देंगे। और पूरे देश में जल मित्र बनाकर जल के संरक्षण पर बल देंगे।

.....